REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2023

स्वतंत्रता आंदोलन कालीन शिक्षा व्यवस्था

डॉ. कृष्ण कुमार पाण्डेय[1] , रितेश तिवारी[2]
[1]असिस्टेण्ट प्रोफेसर,, डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
[2]शोधार्थी (इतिहास विभाग) डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश –

भारत प्राचीन समय से ही शिक्षा और संस्कृति में अग्रणी रही है। मुस्लिम काल मे कबीर, रैयदास, शंकारचार्य, रामानुजाचार्य, चैतन्य महाप्रभु आदि इसी काल में हुए जो मठों आदि की स्थापना करके भारतीय सनातन परंपरा को जीवित रखा। भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के आगमन के पश्चात भारतीय शिक्षा व्यवस्था और संस्कृति में उत्तरोत्तर गिरावट दिखाई देती है।पाश्चात्य शिक्षा का भारत में वातावरण भी बनने लगा। परिणामस्वरूप पाश्चात्य शिक्षा को बढ़ाने के लिए और अपने साम्राज्यवादी हितों की पूर्ति के लिए भारतीय जनमानस पर पाश्चात्य शिक्षा को धीरे–धीरे थोपा गया। अनेकों कमियों और अधिनियमों के माध्यम से अपने शिक्षा नीति को लागू किया। भारतीय प्राचीन कालीन संस्कृति और शिक्षा सम्पूर्ण विश्व में सबसे आगे थी।

प्रस्तावनाः–

भारत प्राचीन समय से ही शिक्षा और संस्कृति में अग्रणी रही हे। सभ्यता की शुरूआत से सिंधु घाटी सभ्यता अन्य समकालीन सभ्यता की तुलना में आगे थी। समकोण पर काटती हुई सड़क हो या व्यापार के लिए प्रयोग किए जाने वाले मुद्रा जो अन्य सभ्यता से ज्यादा विकसित थी। वैदिक काल में ऋगवेद,यजुर्वेद,सामवेद, अथर्ववेद, उपनिषद आदि जैसी प्राचनी पुस्तकें उपलब्ध हैं। जो यह दर्शाती हैं कि वैदिक काल कितना शिक्षा के क्षेत्र में सम्पन्न था। इन प्राचीन साहित्यों में ईश्वरीय महिमा, बलिदान, विधी, औषधियाँ और दर्शन आदि पर आधारित थी। इसी क्रम में बैद्ध–ग्रन्थों में त्रिपिटक जो विनय पिटक, सुत–पिटक तथा अभिधम् पिटक में बाँटा गया है, इनमें भगवान बुद्ध के मृत्यु के बाद उनके शिक्षाओं को संकलित किया गया। बौद्ध काल में नालंदा, विक्रमशील, वल्लभी जैसे विश्वविद्यालय भारतीय संस्कृति और शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे। जैन साहित्यों द्वारा व्यक्तियों तक शिक्षा प्रदान किया गया। समय सार, नियमसार, प्रवचल सार आदि प्रमुख जैन साहित्य थे। इसी प्रकार मौर्यकाल में कौटिल्य का अर्थशास्त्र, विशाखदत का मुद्रा, राक्षस जैसे उत्कृष्ट कृति मौजूद थी। इसमें राजनीति, प्रशसन, कुटनीति, अर्थशास्त्र आदि के बारे में विस्तृत वर्णन मिलता है। गुप्त काल भी भारतीय संस्कृति और शिक्षा को अक्षुण बनाए हुए थी। इस दौरान बड़े–बड़े विद्वानों ने अपने कृति के माध्यम से भारतीय संस्कृति और शिक्षा को शिखर पर पहुंचाया। इस काल में पुराणों , काव्य–ग्रन्थ, नाटक, नीतिग्रंथ,स्मृतिग्रंथ, दर्शन ग्रंथ, विजात प्रशस्तियों आदि कालजयी रचनाओं की प्रचुरता थी। जैसे काव्य ग्रंथ और नाटक कालिदास की अभिज्ञानसकुंतलम, मेघदूत, कुमार संभव, स्मृतियों में यज्ञवलक्य नारद,मनू काव्यायन आदि प्रमुख हैं। इसी प्रकार विष्णु शर्मा का पंचतंत्र और हिन्दुओं का मिताक्षरा प्रमुख है। गुप्त काल में बिजगणित, खगोलशास्त्र, नक्षत्र विज्ञान की शिखा में भी प्रणीण था। प्रसिद्ध गणितज्ञ और खगोलशास्त्री विद्वान आर्यभट्ट ने अपनी पुस्तक आर्यभट्टीयम में बताया है कि पृथ्वी, सूर्य का चक्कर लगाती है। चन्द्रग्रहण , सूर्य ग्रहण पृथ्वी की परिधि आदि के बारे में भी

बताया। इन्हें त्रिकोणमिती का जनक भी कहा जाता है। इसी प्रकार भास्कराचार्य और ब्रम्हापुत्र जैसे विद्वानों ने बीजगणित के क्षेत्र में काफी काम किया। शून्य का आविश्कार भारत में ही हुआ था।

मुस्लिम आक्रमणकारियों से पहले नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशीला, दल्लमी, पुष्पगिरी जैसे विश्वविद्यालय मौजूद थे जहाँपर देश – विदेश से अनेको विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। चीनी यात्री हेन्सांग, फाइहान आदि भारत में शिक्षा प्रदान करने आए थे। इस प्रकार भारतीय प्राचीन काल संस्कृति और शिक्षा सम्पूर्ण विश्व में सबसे आगे थी।

मुस्लिम आक्रमणकारियों के आने के बाद भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर प्रभाव पडा। बख्तियार खिलजी ने 1202 ई में भारतीयों की प्राचीन विरासत नालंदा और विक्रमशीला विश्वविद्यालय को तहस–नहस कर दिया । संस्कृत,पाली, अवधि, हिन्दी आदि भाषाओं में दी जाने वाली शिक्षा के स्थान पर अरबी, फारसी भाषाओं को तरजीह दिया गया। यथनामा, तक्कात–ए–नासिरी, तुगलकनामा, तारीख – ए–फिरोजशाही, रेहला आदि जैसे पुस्तकों की रचना सलतनत काल मे फारसी भाषा में लिखे गए। हालांकि कल्हण की राजतरंगिणी, गंगादेवी, की मुदय विजयम जैसी कृति भारतीय भाषाओं में लिखे गए।

मुगल काल में फारसी और अरबी भाषाओं का प्रचलन बढ़ने के बाद भी भारतीय विद्वानों ने अपने रचनाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति और शिक्षा को जीवित रखा। भक्ति आंदोलन में भारतीय शिक्षा को और बढ़ावा दिया। तुलसीदास की रामचरितमानस, विनय पत्रिका, दोहावली, पार्वती मंगल, गीतावली, सूरदास का सूरसागर, केशदास की कविप्रिया, रसिक प्रिया , अलंकार मंजरी आदि रचनाओ का प्रतिपादन मुगल काल में हुआ। इसी मुस्लिम काल मे कबीर, रैयदास, शंकारचार्य, रामानुजाचार्य, चैतन्य महाप्रभु आदि इसी काल में हुए जो मठों आदि की स्थापना करके भारतीय सनातन परंपरा को जीवित रखा।

भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के आगमन के पश्चात भारतीय शिक्षा व्यवस्था और संस्कृति में उत्तरोत्तर गिरावट दिखाई देती है। कम्पनी के गर्वनर जनरल वारेन्हेस्टींग्स ने अपने ब्रिटिश हुकुमत के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कोलकाता में एक मदरसा की स्थापना 1781 ई. में की। इस मदरसे में फारसी, अरबी और मुस्लिम कानून पढ़ाया जाने वाला था और इस मदरसे के स्नातक ब्रिटिश युमाषिरू के काम करते थे। 1784 ई. में सर विलियम जोंस ने ''एशियाटिक सोसाईटी ऑफ बंगाल की स्थापना की ताकि एशिया के सामाजिक संस्कृति को समझा जा सके। इसी क्रम में 1791 ई. में जोनाथन डंकर ने बनारस में संस्कृत कॉलेज खोला गया ताकि हिन्दुओं के धर्म, साहित्य, और कानून का अध्ययन किया जा सके। प्रारंभ में कम्पनी ने भारतीय रीति–रिवाजों, धर्म , साहित्यों आदि का अध्ययन करना उद्देश्य रखा क्योंकि शासन, प्रशासन या राजनीति को स्थायीत्व प्रदान करने के लिए यह नीति अवाश्यक थी। यह तभी संभव हो सकता था जब ब्रिटिश भारतीय सामाज और संस्कृति को जाने । इस प्रातन भारतीय सभ्यता और संस्कृति को ईसाई मिशनरीयों ने काफी मजाक उड़ाया। राजा राममोहन राय जैसे भारतीय विद्वानों ने भी पाश्चात्य शिक्षा को बढ़ावा दिया। इन्होंने डेविड हेयर और ऐलक्जेंडर के साथ मिलकर 1817 ई. में कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की थी। इस प्रकार पाश्चात्य शिक्षा का भारत में वातावरण भी बनने लगा। परिणामस्वरूप पाश्चात्य शिक्षा को बढ़ाने के लिए और अपने साम्रात्यवादी हितों की पूर्ति के लिए भारतीय जनमानस पर पाश्चात्य शिक्षा को धीरे–धीरे थोपा गया। अनेकों कमियों और अधिनियमों के माध्यम से अपने शिक्षा नीति को लागू किया। साम्राज्यवादी सरकार ने ऐसा आदेश दिया कि सरकारी नौकरी में प्रवेश के लिए अंग्रेजी जानने वालों को सरकारी सेवा में नियुक्त किया जायेगा। इससे भारतीय जनमानस को भी अंग्रेजी शिक्षा में रूची बढ़ी। अनेकों लोगों को नागरिक सेवा, सेना, पुलिस,न्यायिक संगठन आदि में धीरे–धीरे भर्ती किया जाने लगा। इस शिक्षा से भारतीयों की थोड़ी बहुत आर्थिक स्थिति सुधरी। बाद में इस अंग्रेजी शिक्षा को हथियार के तौर पर प्रयोग किया जाने लगा।

विषयवस्तुः –

जब भी किसी साम्राज्य को अधीन करना होता है तब –तब अधीन साम्रज्य के राजनैतिक, सामाजिक, प्रशासनिक, आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्था को बदलना पड़ता है। ताकि विजित देश द्वारा साम्राज्य को स्थाईत्व और दिर्घायु बनाया जा सके। उदाहरण के लिए मुगल साम्राज्य ने भारतीय महाद्विप पर शासन करने के लि धीरे–धीरे अपने भाषाओं फारसी, अरबी आदि को बढ़ावा दिया। अनेको मस्जिदों, मदरसों का निर्माण किया जिससे साम्राज्य के स्थाईत्व प्राप्त हो। मुस्लिम आक्रमणकारियों ने प्रशासन में भी अमूल –चूल परिवर्तन किया।

इसी संदर्भ में अंग्रेजी कम्पनी द्वारा भारत पर राजनैतिक स्थायी त्व प्राप्त करने के बाद अंग्रेजी शिक्षा को समय–समय पर बढ़ावा दिया जिसका मूल उद्देश्य अंग्रेजी शासन के लिए योग्य से योग्य व्यक्ति प्राप्त हो सके।

अग्रेंजी सरकार ने भारत पर शासन के दौरान अनेकों नीतियों का प्रयोग किया। इनमें से एक प्रमुख रूप से शिक्षा व्यवस्था थी। अंग्रेजो की पाश्चात्य शिक्षा में कुछ रोड़े मौजूद थे जिन्हें दूर करना आवश्यक था। भारतीय जनमानस के अधिकतर लोग चाहते थे कि उन्हें शिक्षा उन्हीं के रीतिरिवाजों के अनुसार दी जाए। इसी क्रम में कुछ अंग्रेज अधिकारी भी चाहते थे कि भारतीयों को शिक्षा उन्हीं की भाषा में प्रदान की जाए। ईसाई मिशनरी चाहती थी कि भारतीयों को शिक्षा अंग्रेजी भाषा में प्रदान की जाए। इसी लिए अंग्रेज अधिकारी चाहते थे कि भरतीयों को शिक्षा अंग्रेजी भाषा में प्रदान की जाए। इस प्रकार अंग्रेजी सरकार एक निश्चित निर्णय पर नहीं पहुंच सकी। इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीयों को शिक्षा के लिए प्रदान की जाने वाली राशि जो 1813 ई. में एक लाख रूपए प्रदान की गई थी लम्बे समय तक खर्च नहीं हो सकी।

कुछ वर्षों के पश्चात गवर्नर जनरल विलियम बैंटिक के काल में पाश्चात्य शिक्षा के समर्थन में निर्णय लिया गया। बैंटिक के सहयोगी मैकाल को शिक्षा समिति का सभापति नियुक्त किया गया। मैंकाले रिपोर्ट को 1836 ई. में स्वीकार कर लिया गया । इस प्रकार विलियम बैंटिक ने मैकाले के सहयोग से भारतीयों पर पाश्चात्य शिक्षा में लागू किया गया। इस शिक्षा नीति में यह प्रयास किया गया कि कुछ सीमित साधनों के माध्यम से सीमित और उच्च वर्ग के भारतीयों को पाश्चात्य शिक्षा प्रदान की जाए। इससे शिक्षा अपने आप निम्न भारतीय वर्गों तक पहुंच जाएगी। यहां पर यह कहना आवश्यक है कि पाश्चात्य शिक्षा के लिए दी जाने वाली प्रयाप्त कम थे।

इस प्रकार समय – समय पर अंग्रेजी शासन ने अनेक कमीटियों और आयोगों के माध्यम से पाश्चात्य शिक्षा को बढ़ाने का प्रयास किया जिसमें से कुछ का विश्लेषण आवश्यक है।

1. **चार्ल्स वुड का शिक्षा नीति (1854 ई.) –** इस नीति में अंग्रंजी भाषा को प्राथमिकता तो दी गई थी परन्तु भारतीय भाषाओं में लिखे गये ग्रंथो, काव्यों और रचनाओं को अंग्रेजी भाषा में रूपांतरित करने पर भी विशेष बल दिया गया। गाँवों तथा शहरों में स्कूल तथा कॉलेज खोले जाऐगें। इंग्लैंड की विश्वविद्यालय खोले जाऐं। भारतीय को भी नीजि स्कूल के लिए अनुदान की व्यवस्था की जाए। भारतीय शिक्षकों को ट्रेनिंग के माध्यम से प्रशिक्षित करने की बात थी। सबसे प्रमुख रूप से महिलाओं की शिक्षा की भी बात की गयी।

   इस सुझाव को डलाहौजी ने लागू करने का प्रयास किया। लेकिन इस शिक्षा नीति में प्राथमिक शिक्षा वंचित ही रही। भारतीय प्राचीन शिक्षा पद्धति को धीरे–धीरे नष्ट करने के अलावा प्रशासन के अनुकूल शिक्षा व्यवस्था को धीरे–धीरे भारतीयों पर थोपा गया।
2. **हन्टर कमीशन (1882–1883 ई.) –** हन्टर कमीशन का गठन कहने के लिए तो प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा देने के उपर था परन्तु सत्य बात यह थी कि अंग्रेजी सरकार को भारतीय शिक्षा में ज्यादा रूची नहीं रह गयी थी। वह नही चाहते थे कि भारतीयों के उपर शिक्षा के लिए ज्यादा राशि खर्च हो। हन्टर कमीशन ने कहा कि उच्च शिक्षा संस्थानों के प्रत्यक्ष संचालन और प्रबंधन से पीछे हट जाना चाहिए। कॉलेजों और माध्यमिक स्कूलों को सामाजिक संस्थाओं द्वारा चलाया जाए। प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था जिला परिषद और नगरनिगम के माध्यम से संचालित की जाए इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि हन्टर कमीशन ने भारतीयों की शिक्षा को बढ़ाने के बजाए रूचि कम करने पर बनी कमीशन थी।
3. **भारतीय विश्वविद्यालय कानून (1904 ई.) –** वास्त्व में यह अधिनियम भारतीय जनमानस में बढ़ रही देश प्रेम की भावना और अंग्रेजी शोषण के विरूद्ध असंतोष को दबाने के लिए लाया गया कानून था। बंगाल में हिन्दू –मूस्लिम लगातार आंदोलन कर रहे थे। विश्वविद्यालयों में भारतीय छात्रों में राष्ट्रीयता का प्रादुर्भाव होने लगा था। भारतीय शिक्षक भी भारतीय राष्ट्रीयता को समझने लगे थे। नगरों के शिक्षित बुद्धिजीवियों का अंग्रेजी शासन के विरूद्ध असंतोष लगातार बढ़ रहा था। अतः इस अधिनियम से सभी विश्वविद्यालय और कॉलेज पर सरकारी नियंत्रण स्थापित हो गया। हालांकि इस अधिनियम से ग्रामीण लोगों में बच्चों की शिक्षा में बढ़ोतरी देखी गयी।

4. **सैडलर विश्वविद्यालय कमीशन (1917 ई.)**– इस आयोग ने सुझाव दिया कि माध्यमिक शिक्षा के लिए 12 वर्ष उसके बाद 2 वर्ष इंटरमिडिएट और बी.ए. के लिए तीन वर्ष निर्धारित किया गया। अध्यापकों और महिलाओं को वैज्ञानिक शिक्षा देने पर जोर दिया गया। सरकार ने सभी सुझाओं को मान लिया। बनारस, ढाका, मैसूर, लखनऊ, अलीगढ़ और उस्मानिया विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई। सरकार लेकिन शिक्षा प्रांतीय विषय के क्षेत्र में आता था जिसके कारण शिक्षा पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया। क्योंकि प्रान्तों के पास शिक्षा के राशि बहुत कम आबंटित की जाती थी।

इसी प्रकार हरींग शिक्षा समीति, सारजेन्ट शिक्षा समीति आदि भी समीतियाँ प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा पर जोर दिया। जिसका मूल उद्देश्य भारतीयों के पैसों से भारतीयों को शिक्षा दी जाए और प्रशासन के अनुकूल लोग प्राप्त होते रहें।

आधुनिक भारत में शिक्षा के लिए भारतीयों द्वारा किया गया प्रयास :–

1. **राजा राममोहन राय** – इन्होंने भारतीय कुरीतियों, रूढ़ियों को दूर करने और एकेश्वरवादी मतों का प्रचार करने के लिए 1814 ई. में आत्मीय में सभा की स्थापना की। 1828 ई. में इन्होंने ब्रम्ह समाज की स्थापना की । यह हिन्दू धर्म के सुधार के लिए आधुनिक पाश्चात्य विचारधारा पर आधारित थी।
2. **रामकृष्ण मिशन** – इसकी स्थापना स्वामी विवेकानंद ने की थी। इन्होंने रामकृष्ण परमहंस की शिक्षाओं को बढ़ाओं दिया । भारतीय शिक्षा, संस्कृति का विश्व धर्म संसद में प्रचार –प्रसार किया। उन्होंने भी भारतीय शिक्षा और संस्कृति को बढ़ाने के लिए वेल्लूर, मायावती आदि स्थानों पर मुख्यालय खोला। इनका मानना था कि सभी विभिन्न धार्मिक विचार एक ही मंजिल तक पहुंचने के केवल विभिन्न रास्ते हैं।
3. **आर्य समाज** – इसकी स्थापना दयानंद सरस्वती ने किया था। इस संगठन का मूल उद्देश्य वैदिक धर्मों को युद्ध रूप से स्थापना करना था । वे भारत को धार्मिक,सामाजिक तथा राष्ट्रीय रूप से एक करना चहते थे। लाला लाजपत राज, पंडित गुरूदत्त, लाला हंसराज इसके समर्थकों में से एक थे। 1902 ई. में लाला लाजपत राय तथा हंसराज ने गुरूकुल की स्थापना की। इसी प्रकार दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना की ।
4. **प्रार्थना समाज**– इसकी स्थापना आचार्य केशचंद्र की प्रेरणा से आत्माराम पांडुरंग द्वारा की गई थी। इसका उद्देश्य जाति प्रथा का विरोध, स्त्री–पुरूष की आयु में वृद्धि, विधवा विवाह एवं स्त्री–शिक्षा को बढ़ावा देना था। आत्माराम पांडुरंग के दो सहयोग घोंदो केशव कर्वे ओर रानाडे ने विधवा पुनर्विवाह आंदोलन का संचान किया और विधवाओं को शिक्षा देने के उद्देश्य से 'विधवा आश्रम संघ' की स्थापना की।
5. **सत्यशोधक समाज** – इसकी स्थापना ज्योतिबा फूले ने की थी। इनका उद्देश्य निम्न जाति, दलितों के कल्यांण के लिए आंदोलन चलाना था। इनकी गुलामगीरी और सार्वजनिक सत्य धर्म पुस्तक की रचना की।
6. **अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (24 मई 1920)** – इस कॉलेज की स्थापना सर सैयद अहमद खाने ने की जो हिन्दुस्तानी शिक्षक और नेता थे। इन्होंने भारतीय मुस्लमानों के लिए आधुनिक शिक्षा की शुरूआत की।
7. **बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (1916 ई.)** – इसकी स्थापना मदन मोहन मालवीय ने की। इसका उद्देश्य भारतीयों में विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य सेवा, कानून, चिकित्सा विज्ञान आदि में शिक्षा प्रदान करना था।
8. **रवीन्द्रनाथ टैगोर** – रविन्द्रनाथ टैगोर के द्वारा सीपित शैक्षिक संस्थाओं में शान्ति निकेतन शिक्षा सूत्र, श्रीनिकेतन, विश्वभारती आदि थे जिसमें भारतीय बच्चों को चाहे किसी भी धर्म के हो पढ़ाने की व्यवस्था की। अनाथ बच्चों और जिनके माता पिता कमजोर थे शिक्षा सत्र में पढ़ाने की व्यवस्था थी।
9. **महात्मा गांधी का साबरमती आश्रम** – इसकी स्थापना महात्मागांधी जी के द्वारा किया गया था। इसका उद्देश्य मानव श्रम,खेती–बाड़ी और शिक्षा के महत्व को समझाता था।

निष्कर्ष :–

प्राचीन काल से भारतीय शिक्षा समकालिन सभ्यताओं से आगे थी। भारतीय शिक्षा में समाज में व्याप्त विसंगतियाँ कुरीतियाँ, विकृतियाँ को लगातार दूर करते रही। भारतीय संस्कृतियों एवं शिक्षा पर लगातार हमाला होते रहा। परन्तु मुस्लिम आक्रमणकारियों के था। अंग्रेजों के आगमन बाद भी अपनी अक्षुण्ता बनाए रखी। भारतीय शिक्षा प्रणाली ने स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीयों को जोड़ने का कार्य किया। अंग्रेजों की मूल्य हीनता, नैतिक चारित्रक पतन, कुत्सित राजनीति, अंग्रेजो के दो मुहेपन से भारतीय पारंपरिक शिक्षा हतोत्साहित नहीं हो सकी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

- हिन्दी की पत्र–पत्रिकाएं – सम्पादक विनय अखिल तथा गोण्डराम वर्मा, हिन्दी साहित्य समिति, जयपुर, 1948।
- पत्र–सम्पादन कला– नन्दकुमार देव शर्मा, एस०आर० बैरी एण्ड कं०, 1923।
- पत्र और पत्रकार – कमलापति त्रिपाठी, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी 1943। 36. भारतीय पत्रकारिता कला – आर०ई० वून्सेल, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, 1943।
- बाजपेयी, कृष्णदत्त, 1957, उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक विभूतियां, शिक्षा–विभाग उत्तर प्रदेश
- हिन्दी की पत्र–पत्रिकाएं – सम्पादक विनय अखिल तथा गोण्डराम वर्मा, हिन्दी साहित्य समिति, जयपुर, 1948।